अंक 32

वर्ष-8वां

अक्टूबर - दिसंबर 2014

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

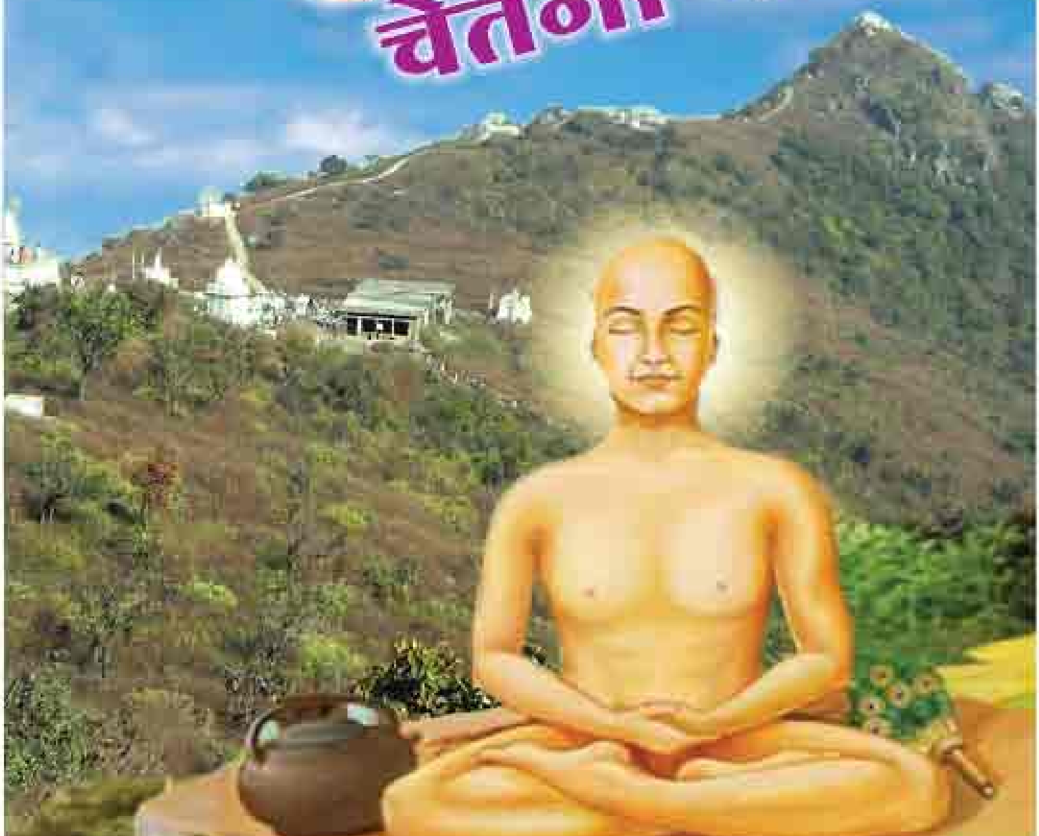

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

80 फुट का मानव कंकाल मिला

जैन शासन में वर्णित पौराणिक कहानियों में प्राचीन काल के मानव और उनके रहन-सहन, आहारादि के स्वरूप का व्यापक वर्णन मिलता है। इसके अनुसार चौथे काल के मनुष्यों की ऊँचाई सैकड़ों फुट होती थी और आयु भी सैकड़ों वर्ष की होती थी। लेकिन हमें इस बात पर आसानी से विश्वास नहीं होता। फिर भी हम जिनवाणी में आया - ऐसा सोचकर विश्वास करने का प्रयास करते हैं। परन्तु कुछ समय पूर्व ही भारत में एक स्थान पर खुदाई में 80 फुट के विशाल मानव का कंकाल प्राप्त हुआ। इससे सहज सिद्ध हो जाता है कि जिनवाणी में आया हुआ प्रत्येक शब्द सत्य है।

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

JULY - SEPT. 2014

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर
प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर
डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर
परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, विले पार्ले, मुम्बई
संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	संपादकीय	2
3.	तीर्थक्षेत्र - एलोरा	3
4.	कविता	4
5.	अब नहीं फोड़ूंगा	5-7
6.	लाडू नहीं श्रीफल	8-9
7.	परिणामों की विचित्रता	10
8.	सृष्टि का क्रम	11-12
9.	शलाका पुरुष	13-14
10.	वीर निर्वाण संवत्	15
11.	महावीर निर्वाण दिवस	16-17
12.	मर्यादा	18
13.	आपके प्रश्न जिनागम के उत्तर	19
14.	संस्कार की जड़े	20
15.	इंटरनेट	21-23
16.	प्रेरक प्रसंग	24
17.	कहान संदेश	25-27
18.	पुरस्कार योजना	28
19.	चेत-चेत रे चेतन प्यारे	29
20.	कैडबरी में सुअर का मांस	30-31
21.	मोबाईल से फटा हाथ	32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक,फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

संपादकीय

प्यारी-प्यारी वीर संतानों,

आप सबको शुभाशीष एवं जय जिनेन्द्र। हमें पूर्ण विश्वास है कि दशलक्षण महापर्व पर आपने यथा संभव जिनधर्म और आत्मधर्म की आराधना की होगी।हमारे ये शाश्वत पर्व हमारी पावन संस्कृति के वाहक और हमारी संस्कृति की सुरक्षा के सशक्त माध्यम हैं। अन्य धर्मों के पर्व तो मौज मस्ती, धूमधाम, प्रदर्शन की मुख्यता लिये होते हैं परन्तु जिनशासन के पर्व त्याग, संयम, सादगी और आत्मदर्शन की प्रेरणा देते हैं। यह हमारा परम सौभाग्य है।

आगामी 23 अक्टूबर को हमारे अंतिम तीर्थंकर शासननायक भगवान महावीर को 2541 वाँ निर्वाण दिवस आ रहा है। आज सम्पूर्ण विश्व में जैन धर्म के परिचय के लिये भगवान महावीर का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। हमें अपने को धन्य अनुभव करना चाहिये कि हम इस महान जैन शासन के अंग हैं, इसलिये हमारे कुछ उत्तरदायित्व हैं जिन्हें पूर्ण करना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

अहिंसा नायक भगवान महावीर को उनके प्रमुख संदेश जियो और जीने दो के उद्घोषक के रूप में जाना जाता है। यदि हम इस महापर्व को सादगी, संयम और अहिंसक पद्धति से मनायें तो यह जिनशासन की सेवा होगी।

आज पूरे देश में धर्म के नाम पर प्रदर्शन के ढोंग होने लगे हैं, युवा वर्ग अपने को सभ्य और पढ़ा-लिखा दिखाने के लिये शील की मर्यादा लांघने लगे हैं। होटलों में भोजन, सिगरेट-शराब का सेवन, कम वस्त्रों का पहनना बड़े होने की निशानी बन गई है। बच्चों में जरा-जरा सी बात पर क्रोध, जिद सामान्य बात हो गई है। ऐसे समय में हम अपने विवेक का भरपूर प्रयोग करें। कहीं थोड़े समय का दिखने वाला आनंद अनंतकाल तक हमारी दुर्गति न कर दे। हमारा निरन्तर यही प्रयास रहा है कि इस पत्रिका के माध्यम से धार्मिक सामग्री के साथ समाज में हो रहे परिवर्तन की जानकारी भी दें जिससे आपका जीवन संस्कारित बन सके। इसी भावना के साथ -

- विराग शास्त्री

जो ज्ञान सूर्य आगे करके चलता है, छाया का वैभव उसके पीछे-पीछे चलता है।

हमारे तीर्थ -

अतिशय क्षेत्र
एलोरा (वरूल)

महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले से मात्र 30 किमी की दूरी पर स्थित एलोरा विश्व पर्यटन केन्द्र के रूप में विख्यात है। यहाँ की गुफाओं में बौद्ध, हिन्दू एवं जैन गुफायें हैं। इनमें क्रमांक 30 से 34 तक की जैन गुफायें वास्तुकला, शिल्पकला एवं चित्रकला की उत्कृष्ट धरोहर हैं। 16 नम्बर की कैलाश गुफा विश्व विख्यात है। इसमें 950 वर्ष प्राचीन भगवान पार्श्वनाथ की अर्द्ध पद्मासन प्रतिमा विराजमान है।

साथ ही पहाड़ पर 16 फुट ऊँची अत्यंत मनोज्ञ भगवान पार्श्वनाथ की भव्य पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। लगभग 350 सीढ़ियों वाले इस चरणाद्रि पहाड़ पर भव्य जिनमंदिर की रचना हमारे पूर्वजों की अतिशय भक्ति का ही परिणाम है। इसका निर्माण सन् 1300 में श्रीवर्धनापुर के राजा राणुगि के पुत्र म्हालुगी ने कराया। कहा जाता है इस पर्वत पर चारण ऋद्धिधारी मुनिराजों के आगमन हुआ था।

तलहटी में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन गुरुकुल संचालित होता है, इसमें वर्तमान लगभग 400 छात्र अध्ययनरत हैं। इन छात्रों को लौकिक शिक्षा के साथ जैन ग्रन्थों का सांगोपांग अध्ययन कराया जाता है।

इस एलोरा क्षेत्र से कचनेर 65 किमी, कुंथलगिरि 240 किमी, पैठण 80 किमी एवं मांगीतुंगी-गजपंथा 180 किमी की दूरी पर स्थित हैं।

सम्पर्क - 02437-244590

सीताजी ओ सीताजी

सीताजी ओ सीताजी
प्यारी - प्यारी सीताजी।
राम से क्यों मुख मोड़ा,
लव - कुश को क्यों छोड़ा
क्यों बन गईं तुम माताजी
हम सबको बतलानाजी ।
राम से मुँह न मोड़ा,
न लव - कुश को छोड़ा ,
प्रीत स्वयं से लागी
हो गई मैं वैरागी ।।

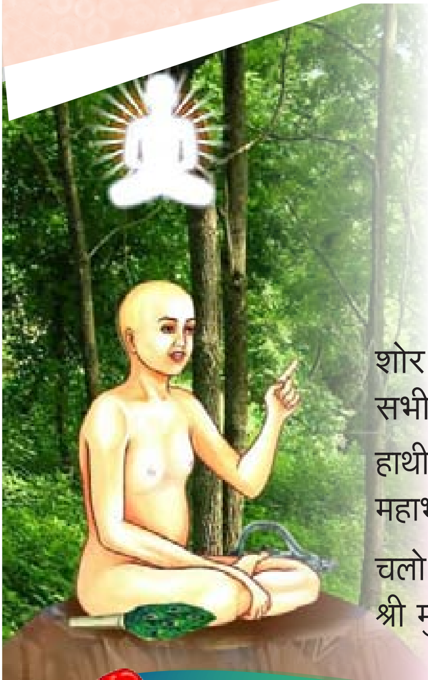

शोर हुआ जब चेतन वन में, हाथी दादा आये।
सभी जानवर उनसे पूछे, चूहे भी हर्षाये।।

हाथी दादा उछल रहे थे, सबको बात बताने।
महाभाग्य से मुनिवर आये, मंगल बात सुनाने।।

चलो चलें सब दर्शन करने, भक्ति भाव जगायें।
श्री मुनिवर से सभी कहेंगे, हित की बात सुनायें।

अब कभी नहीं फोडूँगा

अरे दीप! चल जल्दी, जल्दी नीचे आ यार!- प्रकाश ने दीप को आवाज लगाते हुये कहा।

अरे आ रहा हूँ भाई! आ रहा हूँ.... - दीप नीचे उतरते हुये बोला।

अरे दीप! तुम न मुझे लेट करवा दोगे। सब दुकान बंद हो जायेंगी।

लेकिन भाई! बता तो दो हम कहाँ जा रहे हैं? - दीप ने पूछा।

बाजार और कहाँ ... मैं पापा से 1000 रुपये भी लेकर आया हूँ। तुम्हारे पापा के ट्रांसफर के बाद तुम पहली बार यहाँ दीपावली मनाओगे और वो भी मेरे साथ।

प्रकाश! तुम कपड़े तो पापा के साथ जाकर भी ले सकते थे , इसमें मैं क्या करूँगा?

अरे बुद्धु! हम कपड़े लेने नहीं पटाखे लेने जा रहे हैं। प्रकाश ने हंसते हुये कहा।

पटाखे .....वो क्यों ? दीप ने आश्चर्य से पूछा।

अरे! इतने भोले बन रहे हो यार! याद नहीं दो दिन बाद दीपावली आ रही है। सुबह नये कपड़े पहनकर मंदिर जायेंगे और खायेंगे,पियेंगे और रात में .... प्रकाश चहकते हुये बोला।

रात में क्या? हाँ बोलो, बोलो ना - दीप ने प्रश्न करते हुये कहा।

प्रकाश ने हाथ हिलाते हुये कहा - रात में.... पटाखे, फुलझड़ी, राकेट, एटम बम, अनारदाना, रोशनी जलायेंगे। मुझे तो अभी से पटाखे की आवाज सुनाई देने लगी है। अरे यार! आज तो तुझे भी मजा आ जायेगा, तू भी याद करेगा कि मेरे साथ दीपावली मनाई थी। - प्रकाश ने उत्साह से कहा।

"अच्छा....! तो ये प्लान है। मतलब... दो दिन बाद तुम अनंत जीवों की हत्या करने वाले हो और सैकड़ों जीवों को विकलांग" - दीप उपदेशक की तरह बोला।

प्रकाश - और क्या ....(बात काटते हुये) तुम कैसी बातें कर रहे हो दीप! मैं क्यों किसी की हत्या करने लगा, मुझे तो मरने- मारने के नाम से ही डर लगता है।

अरे! तुम वही करने जा रहे हो .. दीप व्यंग्य करते हुये बोला।

अरे! प्रवचन ही करते रहोगे कि कुछ बताओगे भी.... - प्रकाश शंका की मुद्रा में बोला।

दीप - तुम जानते दीपावली के दिन क्या हुआ था ?

हाँ! भगवान महावीर को मोक्ष हुआ था। इसी खुशी में तो हम दीपावली मनाते हैं।

और उनका सिद्धांत क्या था ? दीप ने फिर पूछा।

प्रकाश - जियो और जीने दो ....

दीप - वाह! तुम तो सब जानते हो । भाई! पूरा विश्व भगवान महावीर को उनके अहिंसा सिद्धान्त के लिये जानता है और हम जैनी होकर भी उनके निर्वाण दिवस पर अनंत निर्दोष जीवों को मार डालते हैं।

वो कैसे ...? प्रकाश ने आश्चर्य से पूछा।

पटाखे फोड़कर....। पटाखे की अग्नि और आवाज से अनंत एकेन्द्रिय से चार इन्द्रिय जीव मर जाते हैं । न जाने कितने प्राणी अपंग हो जाते हैं । - दीप समझाते हुये बोला।

पर पटाखे फोड़ने में मजा भी तो आता है ना और हमारी भावना किसी को मारने की नहीं है वे अपने आप मर जायें तो इसमें हमारा क्या दोष ? - प्रकाश अपना बचाव करते हुये बोला।

वाह प्रकाश! तुम्हारा मजा और दूसरों को सजा। एक आवाज और पटाखे की चमक देखने के लिये इतने जीवों की हत्या। अच्छा मुझे ये बताओ कि यदि तुम्हारा शरीर थोड़ा सा जल जाये तो तुम्हें मजा आता है क्या ?

नहीं! कैसी बात कर रहे हो, बहुत दर्द होता है।- प्रकाश दर्दभरा चेहरा बनाकर बोला।

वाह! तुम्हें जरा सी चोट आये तो दर्द.... और उन जीवों के तो पूरे प्राण ही निकल गये तो कोई चिन्ता नहीं । दीप ने समझाया।

हाँ दीप! तुम बात तो सही कह रहे हो। ये तो मैंने कभी सोचा ही नहीं..। प्रकाश दुःख व्यक्त करते हुये बोला।

दीप - अच्छा प्रकाश! पटाखे फोड़ने से एक भी लाभ हो तो बताओ रुपयों

की बरबादी, चारों ओर शोर से वातावरण प्रदूषित, दूसरे दिन सड़कों पर गन्दगी, आग लगने से लाखों का नुकसान, जल जाने से शरीर का नुकसान जैसी हानि ही हानि ही है। सच में तो पटाखे जलाने वाला जैन तो है ही नहीं, सच्चा इंसान भी नहीं है।

तो दीप हम क्या करें .... ? प्रकाश ने शांत स्वर पूछा।

अरे भाई! ये पर्व तो निर्वाण महोत्सव है। सुबह उठकर भगवान महावीर के निर्वाण को याद करना, आत्म चिन्तन करना, जिनमंदिर जाकर पूजन करना और निर्वाण फल अर्पित करना और भावना करना कि हे भगवान महावीर! जैसे आप संसार का अंत कर पूर्ण सुखी हो गये हो वैसे ही हम भी पूर्ण सुखी हो जायें।

और सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
बैर पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे।।

प्रकाश -(मुस्कराते हुये) अरे वाह दीप! तुम तो पूरे पण्डित बन गये हो कहाँ से सीखा ये सब....

मेरी दादी ने सब सिखाया है और हाँ इस दिन संयम से रहना, अभक्ष्य आदि नहीं खाना और रात्रि में भोजन नहीं करना। निर्दोष जीवों पर करुणा विचार करना। रात्रि में भी जिनमंदिर जाकर जिनेन्द्र भक्ति करना। बाजार की मिठाई भी नहीं खाना ।

प्रकाश - (चहकते हुये) यह तो बहुत बढ़िया होगा।

हाँ प्रकाश! ऐसी दीपावली ही सच्ची दीपावली होगी। दीप ने बात समाप्त करते हुये कहा।

मंगल बधाई

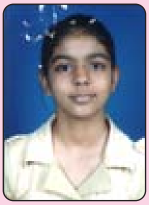

श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी दिल्ली द्वारा संचालित आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन में अध्ययनरत बालिकाओं ने अभूतपूर्व उपलब्धि प्राप्त की है। आध्यात्मिक संस्कारों के मध्य अध्ययनरत कु. प्रज्ञा जैन सुपुत्री श्री अनूप जैन ललितपुर ने 12वीं कक्षा में 93.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। इस हेतु प्रज्ञा जैन को जैन पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

साथ ही जयती जैन सुपुत्री श्री राजेश जैन रतलाम ने दसवीं कक्षा में 10-सीजीपी एवं धार्मिक कक्षा में 94.5 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। जयती जैन को जैनभूषण का पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

लाडू नहीं श्रीफल

जय जिनेन्द्र भाई मोद ! तुम ये शक्कर लेकर कहाँ जा रहे हो ?

अरे निर्वाण ! जय जिनेन्द्र। बस जरा मंदिरजी तक जा रहा हूँ।

कमाल है । सब लोग तो मंदिर चावल लेकर जाते हैं तुम शक्कर लेकर जा रहे हो वो क्यों ?

अरे तुम्हें पता नहीं। तीन दिन बाद भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव आ रहा है। उसमें सुबह पूजन होगी और निर्वाण लाड़ू चढ़ाया जायेगा।

लेकिन .... निर्वाण ! लाड़ू में शक्कर का क्या काम ?

लगता है तुम्हें पता नहीं । मंदिर समिति हर वर्ष शक्कर और बेसन सभी साधर्मियों से एकत्रित करते हैं और शक्कर और बूंदी के लड्डू बनते हैं, वही लाड़ू चढ़ाया जाता है।

अरे ये तुम लोग क्या करते हो? शक्कर या बूंदी के लाड़ू चढ़ाना तो दिगम्बर जैन शासन की परम्परा के विरुद्ध कार्य है .....

वो कैसे ?

अरे भाई ! भगवान की पूजन हिंसा रहित अचित्त वस्तुओं से की जाती है और शक्कर तो अशुद्ध होती है तो क्या हम अशुद्ध वस्तुओं से भगवान की पूजन करेंगे। दूसरी बात इतने लड्डू भगवान को चढ़ायेंगे तो वहाँ चींटी आदि जीव उत्पन्न होंगे और सबकी हिंसा हो जायेगी। मतलब अहिंसा के उपदेशक के निर्वाण दिन पर भयंकर हिंसा...।

लेकिन निर्वाण ! हम अच्छा खाते हैं तो अच्छा ही चढ़ायेंगे ना ....

अच्छा ! तो फिर तो आईसक्रीम भी लाओगे क्या ? रसगुल्ला भी लाओगे क्या ? भाई ! इसका निर्णय हमें अपने मन से नहीं, जिनवाणी के आधार से और

अपने विवेक से करना चाहिये। दिगम्बर तेरापंथ आम्नाय के तेरह नियमों में यह भी आता है कि सचित्त द्रव्यों से भगवान की पूजा नहीं करना।

भाई! तुम्हारी बात विचार करने लायक तो है......

भाई! मेरी बात नहीं है जिनवाणी की बात है। मैं तो बस बता रहा हूँ। कहीं भक्ति - आराधना के उत्साह में पाप तो नहीं कर रहे और हाँ ! पूजन भी दिन में करना। रात्रि पूजन करने में महादोष है।

तो निर्वाण लाड़ू कैसे चढ़ायेंगे ?

ये तो और भी आसान है मोद! नारियल के गोला के धवल कर लो। यही निर्वाण लाड़ू है। लाड़ू को मोदक भी कहा जाता है। इसका अर्थ है प्रसन्नता। हमें भगवान महावीर के मोक्ष गमन की प्रसन्नता है इसलिये हम मोदक अर्पित करते हैं।

भाई निर्वाण ! समझ में आ गया। मैं तो चला।

कहाँ भाई!

शक्कर वापस करने और नारियल का गोला लेने।

वाह भाई! ये हुई ना बात।

संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है।

शिरोमणि परम संरक्षक	–	1 लाख रूपये
परम संरक्षक	–	51 हजार रूपये
संरक्षक	–	31 हजार रूपये
परम सहायक	–	21 हजार रूपये
सहायक	–	11 हजार रूपये
सहायक सदस्य	–	5 हजार रूपये
सदस्य	–	1000/–

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें । आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता कमांक 1937000101026079 में जमा करा सकते हैं !

IFS CODE : PUBN0193700

परिणामों की विचित्रता

अयोध्या नगरी में मन्यु राजा का वज्रबाहु नाम का पुत्र था। वह अपने माता-पिता का बहुत प्यारा था। वज्रबाहु की माँ बचपन से ही उसे मुनिराजों के पास ले जाती थी। उस बालक हृदय में मुनिराज के वचनों का गहरा प्रभाव था। वज्रबाहु के युवा होने पर उसका विवाह हस्तिनापुर के राजा इमवाहन की पुत्री मनोदया के साथ हुआ। मनोदया सर्वगुण संपन्न होने के कारण वज्रबाहु से उससे बहुत स्नेह करता था। एक दिन मनोदया का भाई उदयसुन्दर अपनी बहन को लेने अयोध्या आया। जब उदयसुन्दर अपनी बहन को लेकर हस्तिनापुर जाने लगा तो वज्रबाहु भी साथ जाने के लिये तैयार हो गया। रास्ते में वज्रबाहु की दृष्टि एक पहाड़ी पर ध्यान में लीन एक मुनिराज पर पड़ी। पहले तो शंका हुई कि ये मुनिराज हैं या कोई पेड़, या पत्थर। लेकिन पास जाकर देखने पर यह निश्चित हो गया कि वे परम दिगम्बर वीतरागी मुनिराज हैं।

वज्रबाहु एकाग्र होकर मुनिराज की शांत मुद्रा को देखने लगा। यह देखकर साले उदयसुन्दर ने मुस्कराकर कहा कि आप मुनिराज को बहुत देर से देख रहे हैं, क्या आपका विचार मुनिराज बनने का है? वज्रबाहु ने कहा - हे उदयसुन्दर! तेरा क्या विचार है ? उदयसुन्दर ने हंसकर कहा - यदि आप दीक्षा ग्रहण करते हैं तो मैं भी दीक्षा धारण करूँगा।वज्रबाहु उसी समय हाथी से उतरा और मुनिराज के पास गया और मुनिराज से दीक्षा का निवेदन किया। यह देखकर मनोदया रोने लगी, उदय सुन्दर ने वज्रबाहु को बहुत समझाया परन्तु वज्रबाहु ने मुनिराज के सामने समस्त आभूषण त्यागकर अपने केश उखाड़ दिये।

यह देखकर उदयसुन्दर और मनोदया ने भी दीक्षा धारण कर ली। सभी विचार करने लगे- आज मेरा जीवन सफल हो गया है। यह है परिणामों की विचित्रता।

मन को पवित्र विचारपूर्ण रखो, तो तुम्हारा कोई विरोध नहीं कर सकता।

प्रस्तुत अंक से हम

सृष्टि के क्रम का स्वरूप को प्रारंभ कर रहे हैं -

प्रश्न - 1. भरत-ऐरावत क्षेत्र में सृष्टि का क्या क्रम चलता है

उत्तर -भरत और ऐरावत क्षेत्र के आर्यखण्डों में अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल के दो विभाग होते हैं। अवसर्पिणी काल में मनुष्यों और तिर्यन्चों की आयु, ऊँचाई, बुद्धि, वैभव आदि घटते जाते हैं। उत्सर्पिणी काल में आयु, ऊँचाई, बुद्धि, वैभव आदि बढ़ते जाते हैं।

प्रश्न - 2. एक कल्पकाल कितने वर्षों का होता है

उत्तर - एक कल्पकाल 20 कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है। जिसमें 10 कोड़ा-कोड़ी सागर का अवसर्पिणी काल एवं 10 कोड़ा-कोड़ी सागर का उत्सर्पिणी काल होता है। उदाहरण - ह क्रम ट्रेन के अप-डाउन के समान चलता है। एक ही ट्रेन मुम्बई से कोलकाता और कोलकाता से मुम्बई जाती- आती है।

प्रश्न - 3. अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी के छः-छः भेद कौन से हैं

उत्तर - अवसर्पिणी काल के छः भेद - 1. सुषमा-सुषमा काल 2. सुषमा काल 3. सुषमा-दुषमा काल 4. दुषमा-सुषमा काल 5.दुषमा काल 6. दुषमा-दुषमा काल

उत्सर्पिणी काल के छः भेद - 1. दुषमा-दुषमा काल 2.दुषमा काल 3. दुषमा-सुषमा काल 4. सुषमा-दुषमा काल 5.सुषमा काल 6.सुषमा-सुषमा काल

प्रश्न - 4. दुषमा-सुषमा का क्या अर्थ है

उत्तर - दुषमा - बुरा काल, सुषमा - अच्छा काल

प्रश्न - 5. अवसर्पिणी के प्रथम तीन कालों में एवं उत्सर्पिणी के अन्त के तीन कालों में कौन सी भोग भूमि रहती है एवं उसकी कौन-कौन विशेषतायें हैं।

उत्तर - अवसर्पिणी के प्रथम तीन कालों में एवं उत्सर्पिणी के अन्त के तीन कालों में भोग भूमि रहती है।

भोग भूमि की विशेषतायें -

1. भोगभूमि के जीवों का आहार तो होता है परन्तु निहार मल-मूत्र नहीं होता।

2. यहाँ के मनुष्य अक्षर, गणित, चित्र आदि 64 कलाओं में स्वभाव से ही निपुण होते हैं।

3. यहाँ विकलेन्द्रिय एवं असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव नहीं होते हैं।

4. यहाँ दिन-रात का भेद नहीं होता एवं शीत, गर्मी की वेदना नहीं होती।

5. यहाँ सुन्दर नदियाँ, कमलों से भरे तालाब, रत्नों से भरी पृथ्वी एवं कोमल घास होती है।

6. यहाँ के मनुष्य एवं तिर्यन्चों का वज्रवृषभनाराच संहनन एवं समचतुरस्र संस्थान होता है।

7. यहाँ युगल बेटा-बेटी का जन्म एक साथ होता है एवं इनके जन्म होते ही पिता को छींक आने से और माँ को जम्भाई आने से माता-पिता का मरण हो जाता है।

8. युगल संतान ही पति-पत्नी के रूप में रहते हैं।

9. मृत्यु के बाद इनका शरीर कपूर की तरह उड़ जाता है।

10. यहाँ नपुंसक वेद वाले मनुष्य नहीं होते।

11. इन्हें भोग-उपभोग की सामग्री कल्पवृक्षों से मिलती है।

12. यहाँ के मनुष्यों में 9000 हाथियों के बराबर बल पाया जाता है।

- शेष अगले अंक में

सहयोग प्राप्त

11000/- श्री महावीर कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन सर्वोदय ट्रस्ट, औरंगाबाद की ओर से।

5000/- अक्षत नितेश जैन, मुम्बई हस्ते श्री विमल जैन की ओर से प्राप्त।

1000/- गुप्त दान, औरंगाबाद हस्ते एक महिला साधर्मी

500/- गुप्त दान, औरंगाबाद हस्ते एक महिला साधर्मी

जीवन में चार चीजें मत तोड़िये - विश्वास, रिश्ता, हृदय, वचन।

शलाका पुरुष

प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक काल चक्र में 63 शलाका पुरुष होते हैं। इन शलाका पुरुषों में 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण, 9 बलभद्र होते हैं। इनमें चक्रवर्ती के बारे में विशेष जानकारी प्रस्तुत है -

पूर्व जन्म में किये गये तप के बल से चक्रवर्ती की आयुधशाला में एक अद्भुत चक्ररत्न प्रगट होता है। इसके बाद चक्रवर्ती जिनेन्द्र भगवान की पूजन करके चक्ररत्न लेकर दिग्विजय के लिये प्रस्थान करता है और सम्पूर्ण छःखण्ड को जीतकर अपनी राजधानी वापस लौट आता है।

1. प्रत्येक चक्रवर्ती उत्तम संहनन वाले और स्वर्ण वर्ण के होते हैं।
2. चक्रवर्ती की 96 हजार रानियाँ होती हैं, जिनमें 32 हजार आर्यखण्ड की कन्यायें, 32 हजार विद्याधर कन्यायें और 32 हजार म्लेच्छ कन्यायें होती हैं।
3. प्रत्येक चक्रवर्ती के संख्यात पुत्र-पुत्रियाँ, 32 हजार गणबद्ध नामक देव अंगरक्षक, तीन सौ साठ वैद्य, 360 रसोइये, 350000000 (साढ़े तीन करोड़), बन्धुवर्ग, तीन करोड़ गायें, एक करोड़ थालियाँ, एक करोड़ हल, अठासी हजार म्लेच्छ योद्धा, बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजा, बत्तीस हजार संगीत शालायें और अड़तालीस करोड़ पदातिगण होते हैं।
4. चक्रवर्ती के छः अंग का बल - चक्र रत्न, चौरासी लाख भद्र हाथी, चौरासी लाख रथ, अठारह करोड़ उत्तम जाति के घोड़े, चौरासी करोड़ उत्तम योद्धा, असंख्यात देव और विद्याधर सैन्य होते हैं।
5. प्रत्येक चक्रवर्ती के छियानवे करोड़ ग्राम, 75000 नगर आदि के साथ चौदह रत्न, नव निधि और दशांग भोग होते हैं।
6. चक्रवर्ती की नव निधियाँ -

1.काल निधि	-	मौसम के अनुसार अनेक पदार्थ प्रदान करती है।
2.महाकाल निधि	-	अनेक प्रकार के भोजन के पदार्थ देती है।
3. माणवक निधि	-	अनेक प्रकार के आयुध प्रदान करती है।
4.पिंगल निधि	-	अनेक प्रकार के आभूषण प्रदान करती है।
5.नैसर्प निधि	-	विभिन्न प्रकार के मन्दिर / भवन प्रदान करती है।
6. पद्म निधि	-	अनेक प्रकार के वस्त्र करती है।
7.पांडुक निधि	-	अनेक प्रकार के अनाज प्रदान करती है।
8.शंख निधि	-	विभिन्न प्रकार के वाद्य यन्त्र प्रदान करती है।
9.सर्वरत्न निधि	-	अनेक प्रकार के रत्न प्रदान करती है।

7. चक्रवर्ती के पाँच इन्द्रियों के विषय / फल का स्वरूप -

1.स्पर्शन इन्द्रिय - 9 योजन तक का विषय जान लेते हैं।
2.रसना इन्द्रिय - 9 योजन तक का विषय जान लेते हैं।
3.घ्राण इन्द्रिय - 9 योजन तक का विषय जान लेते हैं।
4.चक्षु इन्द्रिय - 472627/7 योजन तक का विषय देख लेते हैं।
5.श्रोत्र इन्द्रिय - 12 योजन तक का विषय सुन लेते हैं।

8. चक्रवर्ती के 14 रत्न -

1. सेनापति रत्न - सेनानायक आर्यखण्ड और पाँच म्लेच्छखण्ड पर विजय दिलाता है।
2. गृहपति रत्न - राजभवन की व्यवस्थाओं का संचालनकर्ता एवं संपत्ति को संभालने वाला।
3. पुरोहित रत्न - समस्त धार्मिक अनुष्ठान में मार्गदर्शन देता है।
4. रथपति रत्न - चक्रवर्ती की इच्छानुसार महल, मंदिर, प्रसाद आदि को तैयार करता है।
5. स्त्री रत्न - चक्रवर्ती की 96 हजार रानियों में मुख्य पटरानी।
6. गजपति रत्न - शत्रु राजाओं के गज समूह को विघटित करने वाला।
7. अश्व रत्न - तिमिस्र रत्न के द्वार खोलने में बारह योजन तक दौड़कर पार होने वाला।
8. चक्ररत्न - बैरियों का संहार करता है।
9. छत्र रत्न - सेना के ऊपर आने वाली धूप, वर्षा, धूल, ओले, वज्र आदि से रक्षा करता है।
10. असि रत्न - चक्रवर्ती के चित्त को प्रसन्न करता है।
11. दण्ड रत्न - चक्रवर्ती के सेना की जमीन को साफ करने वाला।
12. काकिणी रत्न - गुफा आदि के अंधकार को दूर करता है।
13. इच्छित रत्न - चक्रवर्ती की इच्छा के अनुसार कार्य पूरे करता है।
14. चर्म रत्न - सेना आदि को नदी आदि से सुरक्षित पार कराता है।

चक्रवर्ती के इस प्रकार चेतन और अचेतन चौदह रत्न होते हैं। चेतन रत्नों में 1 से 5 रत्न अपने - अपने नगरों में उत्पन्न होते हैं और 6-7 रत्न विजयार्ध पर्वत पर उत्पन्न होते हैं। अचेतन रत्नों में 8 से 11 रत्न तक आयुधशाला में उत्पन्न होते हैं तथा 12 से 14 रत्न श्रीदेवी के मन्दिर में होते हैं। इन चौदह रत्नों में प्रत्येक रत्न का रक्षण एक-एक हजार यक्ष देवता किया करते हैं।

- शेष विवरण अगले अंक में

वीर निर्वाण संवत्
सबसे प्राचीन

विभिन्न धर्मों में अपने महापुरुषों के नाम से संवत् चलाने की परम्परा रही है। जैन धर्म में भगवान महावीर के निर्वाण दिवस से वीर निर्वाण संवत् का प्रचलन है। यह सभी संवत् में सबसे पुराना है। इस बात का प्रमाण आमेर जयपुर में रखे म्यूजियम में रखे शिलालेख से भी मिलता है।

1.वीर निर्वाण संवत् - भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण होने के दूसरे दिन से ही कार्तिक सुदी 1 से प्रारंभ हुआ।

2.विक्रम संवत् - यह संवत् राजा विक्रमादित्य से सम्बन्धित है एवं महावीर निर्वाण के 470 बाद प्रारंभ हुआ।

3. शक् संवत् - यह संवत् अब प्रचलन में नहीं है किन्तु इतिहास बताता है यह प्राचीन समय में दक्षिण भारत में प्रचलित था। यह राजा सातकर्णी शालीवाहन ने भगवान महावीर के निर्वाण के 605 वर्ष बाद प्रारंभ हुआ।

4.शालिवाहन् संवत् - यह संवत् भी आज प्रचलन में नहीं है। यह भी दक्षिण भारत में प्रचलित था और भगवान महावीर के 741 वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ।

5.ईस्वी संवत् - यह संवत् भी आज सर्वाधिक प्रचलन में है। यह संवत् ईसामसीह के स्वर्गवास के बाद यूरोप में प्रचलित हुआ और भगवान महावीर के 725 वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ।

6.गुप्त संवत् - इस संवत् की स्थापना गुप्त साम्राज्य के प्रथम सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपने राज्य अभिषेक के समय प्रारम्भ किया। यह संवत् भगवान महावीर के 846 वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ।

7. हिजरी संवत् - यह संवत् पैगम्बर मोहम्मद साहब के मक्का से मदीना जाते समय से उनकी हिजरत में महावीर के 1120 वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ।इसी को मुहर्रम या श्वान सन् भी कहते हैं।

8.मघा संवत् - यह संवत् भगवान महावीर के 1003 वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ।इसका प्रचलन कहीं नहीं है।

महावीर निर्वाण दिवस कैसे मनायेंगे

स्वयं निर्णय करें

ऐसे

- अहिंसा सिद्धान्त के उद्घोषक के मोक्ष गमन दिवस हिंसा करके
- जियो और जीने दो के संदेश देने वाले के नाम पर पटाखे जलाकर अनंत जीवों को मारकर
- रात्रि में पूजन करके जैन परम्परा के विरुद्ध कार्य करके
- दीपकों की लौ और घी-तेल में गिरते जीवों को मरते देखकर
- हजारों मूक प्राणियों को पटाखों की आवाज से डराकर
- पटाखों की धुयें से सम्पूर्ण वातावरण को प्रदूषित करके
- जरा सी आवाज और रोशनी के लिये मेहनत से कमाये रुपयों को बरबाद करके
- जैन धर्म की मंगल संस्कृति के विरुद्ध कार्य करके
- निर्वाण का प्रतीक सचित्त बूंदी या शक्कर का लाडू चढ़ाकर

या ऐसे

- प्रातः उठकर सर्वप्रथम भगवान महावीर का ध्यान करके
- भगवान बनने का पुरुषार्थ करेंगे - ऐसा संकल्प करके
- जिनमंदिर में भगवन्तों का प्रक्षाल एवं विशेष पूजन-विधान करके
- निर्वाण दिवस पर हिंसात्मक आहार-उपयोग करने की वस्तुओं का त्याग करके
- पटाखों का सर्व प्रकार से त्याग करके
- जिनमंदिर में दान, योग्य पात्रों को दान देकर
- किसी तीर्थ क्षेत्र की वंदना करके
- निर्वाण का प्रतीक अहिंसक नारियल का गोला अर्पित करके
- पटाखों को त्यागकर धन बचाकर परिवार और देश के कर्तव्य निभाकर

निर्णय आपके हाथों में है

आपका एक गलत निर्णय इस महान जिनशासन के मूल्यों, संस्कृति, निर्ग्रन्थ परम्परा के लिये अहितकारी हो सकता है..........

विचार करें ....

निवेदक - चहकती चेतना, जबलपुर

इसे निकालकर उचित स्थान पर लगायें ।

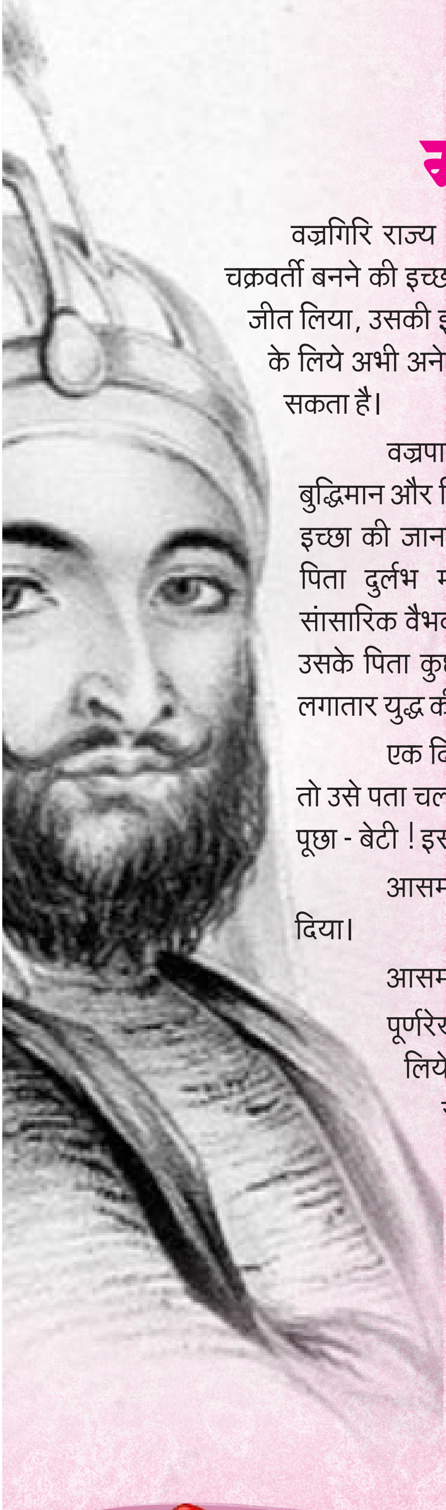

मर्यादा

वज्रगिरि राज्य में राजा वज्रपाल शासन करता था। उसके मन में चक्रवर्ती बनने की इच्छा हुई इसलिये उसने अनेक देशों से युद्ध करके उन्हें जीत लिया, उसकी इच्छा बढ़ती ही जा रही थी उसे लगा कि अभी जीतने के लिये अभी अनेक देश बाकी हैं और इस सारे संसार को जीता जा सकता है।

वज्रपाल की पूर्णरेखा नाम की एक ही पुत्री थी, वह बहुत बुद्धिमान और विवेकवान थी। उसे अपने पिता की संसार विजय की इच्छा की जानकारी थी। परन्तु उसे इस बात का दुःख था उसके पिता दुर्लभ मनुष्य पर्याय को आत्मकल्याण में न लगाकर सांसारिक वैभव की प्राप्ति में बरबाद कर रहे थे। वह सोच रही थी उसके पिता कुछ समय बाद युद्ध करना बंद कर देंगे परन्तु पिता लगातार युद्ध की तैयारियों में लगा रहता था।

एक दिन रात्रि में राजा वज्रपाल अपनी पुत्री से मिलने गया तो उसे पता चला वह छत पर है।राजा ने छत पर जाकर पूर्णरेखा से पूछा - बेटी ! इस अंधेरे में क्या कर रही हो

आसमान की ओर देख रही हूँ पिताजी - पूर्णरेखा ने उत्तर दिया।

आसमान में देखने के लिये क्या है बेटी ? - राजा ने पूछा।

पूर्णरेखा ने शांत भाव से उत्तर दिया - आसमान में घूमने के लिये जब विशाल स्थान है तो ये ग्रह-नक्षत्र-तारे अपने ही सीमित स्थान पर क्यों घूमते हैं यही सोचकर आश्चर्य होता है।

यह बात सुनकर वज्रपाल विचार करने लगा - अहो ! सचमुच मैं अपनी सीमा का उल्लंघन कर रहा हूँ। मेरी मर्यादा तो मेरे आत्मा तक ही है और उसने तुरन्त युद्ध करना बन्द कर दिया।

हम भी अपनी मर्यादा का उल्लंघन करने का प्रयास करते हुये संसार-विषय-भोग को एकत्रित करने में अपना अमूल्य समय नष्ट कर रहे हैं। क्या हमें अपनी मर्यादा का समझ आयेगी ?

आपके प्रश्न जिनागम के उत्तर

प्रश्न : 1 यदि बिल्ली चूहे को मार रही हो और हम बिल्ली को डराकर भगायें तो क्या हमें पाप लगेगा ?

उत्तर - आपके परिणाम चूहे की जान बचाने के हैं इसलिये दयामय भाव होने से पुण्य भाव है।

प्रश्न : 2 - प्रतिदिन दर्शन-पूजन का नियम हो और ट्रेन में कैसे नियम का पालन होगा ?

उत्तर - अपना चित्त एकाग्र करके देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करना चाहिये और सूर्य में अकृत्रिम जिनप्रतिमायें हैं उन्हें नमस्कार करके भाव पूजन करना चाहिये ।

प्रश्न : 3 मुनिराज आहार के लिये कितने बार निकलते हैं मुनि के आहार के भाव शुभ भाव हैं या अशुभ भाव ?

उत्तर मुनिराज आहार के लिये एक बार ही निकलते हैं, मुनिराज के भोजन का भाव शुभ भाव है क्योंकि मुनिराज भोजन शरीर अथवा स्वाद की पुष्टि के लिये नहीं करते बल्कि तप के साधन के लिये है।

प्रश्न : 4 अमेरिका, जापान, इंग्लेण्ड आदि देश आर्य खण्ड में या म्लेच्छ खण्ड में ?

उत्तर - छहों महाद्वीप आर्यखण्ड में हैं।

प्रश्न : 5 कुकिंग गैस शुद्ध है या अशुद्ध ?

उत्तर - गैस जमीन से निकाली जाती है इसलिये शुद्ध है।

प्रश्न : 6 अधिक नींद किस कर्म के उदय से आती है ?

उत्तर - स्वयं के प्रमाद और दर्शनावरण कर्म के उदय से।

प्रश्न : 7 सेव-केला आदि क्या हरी वनस्पति में आते हैं, क्या अष्टमी आदि पर्व में ये ले सकते हैं ?

उत्तर - हरी वनस्पति का अर्थ हरे रंग से नहीं है बल्कि सचित्त वस्तु से है। इसलिये विशेष पर्व में यदि आपके हरी वनस्पति का त्याग है तो इन फलों को नहीं लेना चाहिये

प्रश्न : 8 सूतक-पातक कितने दिन का होता है ?

उत्तर - जन्म का सूतक 10 दिन का और मरण का पातक 12 दिन का होता है। पीढ़ी के परिवर्तन से इसके दिन में अंतर होता जाता है।

लोक में जो छिप-छिप कर किया जाये वह पाप है ।

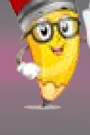

संस्कारों की जड़ें

उस वृद्धा माँ को अपने घर के बाहर की रंग-बिरंगे फूलों वाली बगिया बहुत प्यारी लगती थी। प्रातः जिनमंदिर से आकर सबसे पहले बगिया की देखभाल करती थी। उसे इन नन्हें पौधों में जीव दिखाई देता था। एक दिन वह माँ बीमार हो गई, परन्तु माँ को स्वयं से अधिक अपनी बगिया की चिन्ता थी। माँ की यह चिन्ता सुनकर उसके पढ़े-लिखे बेटे ने कहा - माँ! आप चिन्ता न करें, जब तक आपका स्वास्थ्य सही नहीं हो जाता मैं इस बगीचे की देखभाल करूँगा। माँ यह सुनकर निश्चिंत हो गई। कुछ दिन थोड़ा ठीक होने के बाद वह अपने बगीचे देखने के लिये गई तो उसने देखा कि अधिकांश फूल-पौधे मुरझा गये हैं। कुछ तो सूख ही गये थे। बेटे से इसका कारण पूछने पर बेटा बोला - माँ! मैंने तो इस बगिया की अच्छी तरह देखभाल की है, मैंने फूलों को अच्छी तरह और समझदारी से सींचा है। आप हमेशा नीचे पानी देती थी और बहुत सारा पानी मिट्टी में बरबाद हो जाता था मैंने सारे फूलों को और पत्तियों को सींचा है।

माँ बोली- बेटा! तुम पढ़-लिखकर भी नासमझ हो। तुम्हें नहीं पता कि पौधों को कैसे सींचा जाता है ? अरे ! फूलों को नहीं सींचा जाता उसके मूल जड़ में पानी दिया जाता है, तो फूल अपने आप ही खिलते हैं।

ऐसे ही हम सब संतान के बिगड़ने, जिद्दी होने और बड़ा हो जाने पर उसे उपदेश देकर सुधारना चाहते हैं जिसका असर नहीं होता। बचपन जीवन का मूल होता है। संतान को बचपन में जितने संस्कार, सुविचारों से तैयार किया जायेगा वही जवानी में काम आयेंगे। इसलिये बचपन में नैतिक एवं धार्मिक संस्कार देने का हर संभव प्रयास करना चाहिये। यही हर माता-पिता का अनिवार्य कर्तव्य है।

जन्मदिन की शुभकामनायें

जिनदेव सुहाने जिनवाणी सुहानी, गुरू सुहाने हैं सुखकार।
जन्म दिवस पर यही कामना, शिवपद पाओ मंगलकार।।

सुहानी पाटनी, रतलाम 21 सितम्बर

इंटरनेट से बरबाद होता बचपन

अभिभावकों से विनम्र निवेदन

वर्तमान आधुनिक युग में बढ़ती तकनीक एक ओर कार्य को आसान बना रही है वहीं दूसरी ओर इसके घातक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। पुणे में रहने वाले एक बच्चे की उम्र मात्र 15 वर्ष है। कम्प्यूटर, इंटरनेट, स्मार्ट फोन, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि का उसे बहुत शौक है। व्हाट्स एप, फेस बुक, ट्विटर जैसी सारी सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर उसके एकाउंट हैं। सभी साइट्स पर उसके बहुत सारे दोस्त हैं। वह अधिकांश समय अपने कमरे का दरवाजा बंद करके इन साइट्स पर घंटों अपने दोस्तों से बातें करता रहता था। इस बालक की माँ अध्यापिका हैं। उन्होंने देखा कि उनका बेटा इंटरनेट की लत का शिकार हो रहा है तो वह बहुत दुःखी हुईं। उन्होंने बच्चे को इंटरनेट की लत से छुटकारा दिलाने के लिये इंटरनेट का कनेक्शन ही कटवा दिया, जिससे उनका बेटा कमरे से बाहर निकलकर सामाजिक माहौल में आ सके। उनका यह कार्य बेटे के हित में था। परन्तु उनके इस निर्णय का उल्टा ही असर हुआ। बच्चा अपनी 47 वर्षीया माँ से बहस करने लगा, बहस इतनी बढ़ गई कि बच्चा गुस्से में किचन से चाकू ले आया और माँ को मारने के लिये दौड़ा। पत्नी की चीख सुनकर बगल के कमरे से बच्चे के पिता दौड़कर आये और अपनी पत्नी को बचाया। बच्चे को मुंबई के बायकुला के मैसिका अस्पताल में भर्ती कराया। उसने वहाँ भी चिल्ला-चिल्लाकर अपने

माता-पिता के फैसले का विरोध किया। लगभग एक माह के शॉक ट्रीटमेन्ट से इसका इलाज चल रहा है।

क्या आपके परिवार में कहीं ऐसी ही समस्या तो जन्म नहीं ले रही? आज फेसबुक, ट्विटर, व्हॉटस एप पर एकाउंट होना नये जमाने के साथ तालमेल का प्रतीक बन गया है। आपको भी अक्सर आपके ही मित्र यह कहते हुये मिल जायेंगे कि यार! तुम व्हॉट एप पर नहीं हो, कमाल है मतलब हमारी योग्यता का मापदंड अब व्हॉट एप करेगा और एक सामान्य अध्ययन के अनुसार व्हॉट एप अथवा सोशल साइट्स पर आने वाले 90 प्रतिशत संदेशों, वीडियो आदि का हमारे जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं और यदि कोई संदेश जो हमारे जीवन को एक दिशा दे सकता है वह अपने जीवन में लागू करने के बजाय दूसरे दोस्त को फारवर्ड करने के ज्यादा काम आता है। मानो सभी ने दूसरे को सुधारने का कॉन्ट्रेक्ट लिया हो और स्वयं उपदेशक की भूमिका हों। आज ट्रेन, बस अथवा किसी भी सार्वजनिक स्थल पर लोग आपस में बात करना ही भूल गये हैं, बस वे उनका फोन। इसमें कोई संदेह नहीं कि तकनीक ने कार्य की गति और तरीका बदला है परन्तु इसके खतरे ज्यादा बड़े हो गये हैं।

आज भाई-बहन, पत्नी-पति, माता-पिता से अधिक करीब स्मार्ट फोन हो गया है। अब एक घंटे के लिये भी स्मार्ट फोन का वियोग बर्दाश्त नहीं हो पाता। यदि किसी की माँ अपने बेटे के फोन को थोड़ा देख भी ले तो बेटे को क्रोध आ जाता है। बच्चों को फोन का लॉक होना और माँ-पिता को भी पासवर्ड न पता होना उनके चित्त की अनैतिकता की संकेत करता है। एक लोकप्रिय अभिनेत्री कहती है कि यदि मुझे सुबह उठते समय मेरा फोन न मिले तो मैं मर ही जाऊँगी।

एक यात्रा के दौरान मुझे एक होनहार युवक ने मुझे बताया कि मेरे परिवार में मेरे माता-पिता के अलावा मेरी एक बहन है। हम 24 घंटे में मात्र रात्रि को ही साथ बैठ पाते हैं परन्तु हम चारों साथ बैठकर अपने-अपने स्मार्ट फोन पर ही उलझे रहते थे जिससे परिवार की दूरियाँ बढ़ने लगीं और हमारे स्नेह प्रश्न चिन्ह लगने लगा। फिर हम चारों ने निर्णय किया कि हम जब साथ होंगे तो फोन से दूर रहेंगे। मैं उस युवक और उसके परिवार को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्हें समय पर समस्या को पहचानकर उसका समाधान खोज लिया।

इस समस्या का सबसे बड़ा कारण है कि माता-पिता अपने बच्चों को पूरा समय नहीं दे पाते। व्यापार या अन्य कार्य आदि की इतनी व्यस्तता होती है कि उनके बच्चे क्या करते हैं उन्हें कुछ जानकारी नहीं होती। पिता तो बस उनके द्वारा मांगे गये रुपये देकर को अपना कर्तव्य पूरा समझते हैं। लेकिन उनकी भावनाओं को समझना, उनकी दिनचर्या के बारे में जानकारी रखना, उनके दोस्तों के बारे में जानकारी रखना, उन्हें समय-समय पर अपने अनुभव का लाभ देना - यही पिता का कर्तव्य है।

हर माह बाजार में नई तकनीक आ रही है तो क्या हमें इसके खतरों से निपटने के लिये तैयार हैं। अग्रणी मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि स्मार्ट फोन और इंटरनेट की लत बच्चों की जिन्दगी पर बुरा असर डाल रही है। इससे वे आक्रामक हो रहे हैं और कभी -कभी हिंसक भी। उनसे जब भी आप स्मार्ट फोन दूर हटाने की कोशिश की जाते हैं तो वे भड़क जाते हैं। उन्हें लगता कि जैसे कोई प्यारी और सबसे नजदीकी चीज उनसे छीन ली गई हो। कहीं ऐसा एक नया रोग हमारे घर में तो नहीं पैदा हो रहा, जिससे हम बेखबर हों और कुछ समय यह बीमारी नासूर न बन जाये और हमारे पास शायद कुछ न बचे........ और इसकी दवा मार्केट में नहीं मिलती।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

संस्था की 15 वर्षीय योजना के नये सदस्य

संस्था द्वारा संचालित 15 वर्षीय योजना का सदस्य बनने पर संस्था द्वारा पूर्व में निर्मित सीडी, साहित्य भेजा जायेगा तथा चहकती चेतना पत्रिका के साथ आगामी 15 वर्षों तक संस्था द्वारा निर्मित होने वाली समस्त सामग्री भी निःशुल्क भेजी जायेगी।

इसके नवीन सदस्य -

1. अशोक जे. शाह, मीरा रोड, थाणे 2. ध्रुव चेतन जैन, बैंगलोर
3. श्री विवेक जैन, लखनऊ 4. श्री प्रवीण कुमार जैन, खड़गपुर पश्चिम बंगाल
5. तेजल निर्दोष परतवार, औरंगाबाद 6. रिया राहुल दोडल, औरंगाबाद

शास्त्र में शब्द होते हैं परन्तु उसके भाव ज्ञानी पुरुष के ज्ञान में होते हैं।

दयावान वर्णीजी

एक बार ब्रह्मचर्य अवस्था में वर्णीजी सागर के विद्यालय के तीसरी खंड के एक छोटे से कमरे में अध्ययन कर रहे थे।तभी अचानक बाहर शोरगुल होने लगा, लोगों की भीड़ जमा हो गई। पता करने पर ज्ञात हुआ कि सड़क के पास ३ फुट के गड्ढे में गधा गिर गया था और वह बाहर निकलने के लिये छटपटा रहा था, परन्तु कोई उसे गधे की सहायता नहीं कर पा रहा था।

वर्णीजी यह देखकर नीचे आये, नीचे आने की जल्दी में जैसे ही वे भागे तो उनके सिर में गंभीर चोट लग गई। अपने सिर से खून निकलता देखकर भी वे गधे को बचाकर ही लौटे।

न्याय

बात रतलाम की है। श्रीनिवास का पुत्र न्यायाधीश था। एक संस्थान से रुपये चोरी करके आरोप में श्रीनिवास को उनके ही पुत्र की अदालत में प्रस्तुत किया गया। दोनों पक्षों के वकीलों से सभी तर्क से अपनी बात रखी। निर्णय वाले दिन अदालत में बहुत भीड़ थी, प्रत्येक व्यक्ति यह जानने का उत्सुक था कि पुत्र अपने पिता के विरुद्ध क्या निर्णय करेगा

सम्पूर्ण प्रमाणों के आधार पर न्यायाधीश ने श्रीनिवास को छह महीने का कारावास और पाँच सौ रुपये का दण्ड दिया।

अदालत की कार्यवाही समाप्त होने के बाद न्यायाधीश एक पुत्र की तरह अपने पिता श्रीनिवास के चरणों में सिर रखकर बोला - "बाबूजी मैंने आपको नहीं, मेरे न्यायाधीश ने एक अपराधी को दण्ड दिया है, न्याय सम्बन्धों से बड़ा है।"

सरलता

नेताजी सुभाषचंदजी बोस किसी सभी में भाषण दे रहे थे। विरोधी पार्टी के किसी आदमी ने भीड़ में से उन पर एक जूता फेंका। इसके पहले सभा का वातावरण बिगड़े कि तुरन्त नेताजी बोले - जिन सज्जन ने यह उपहार भेजा है, कृपा करके इसकी जोड़ी का जूता भी भेज दें। नहीं तो यह मेरे लिये बेकार रहेगा। यह सुनकर उपस्थित जनता हंसने लगी और सभा फिर से व्यवस्थित रूप से चलने लगी।

dgku In'k

आर्ट केम्प - २०१४ सफलता के साथ संपन्न

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के 125वें जन्म जयन्ती वर्ष में के विविध आयोजनों की शृंखला में अध्यात्म तीर्थ सोनगढ़ में आर्ट केम्प - 2014 सानंद संपन्न हुआ। इस आर्ट केम्प में देश के विख्यात 31 पेन्टर शामिल हुये और सभी ने जैन दर्शन के सिद्धान्तों, जिनमंदिर, देव-शास्त्र-गुरु, गुरुदेवश्री के अत्यंत आकर्षक 125 चित्र विविध विधाओं से बनाये। इस आर्ट केम्प का उद्देश्य आध्यात्म और कला को एक मंच पर लाना था। इस आर्ट केम्प का आयोजन श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई के सौजन्य से पेन्टरनेट कपंनी मुम्बई द्वारा स्वाध्याय मंदिर के पीछे के विशाल प्रागंण में किया गया। इस कार्यक्रम में आदरणीय अनंतराय ए. सेठ, श्री हसमुखभाई वोरा, श्री नेमिषभाई शाह परिवार सहित उपस्थित थे। कार्यक्रम के सम्मान समारोह में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह के विद्यार्थियों द्वारा शब्द ब्रह्म पर एक आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम की सफलता में श्री प्रकाश शाह, श्री नीलेशभाई मेहता, श्री राहुल जैन का विशेष योगदान रहा। इस केम्प में तैयार किये गये चित्रों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना तैयार की जा रही है।

बाल कविता पुस्तक ''हमारी प्यारी पाठशाला'' का विमोचन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा बाल साहित्य की शृंखला में नवीन प्रकाशित पुस्तक ''हमारी प्यारी पाठशाला'' का विमोचन आध्यात्मिक शिक्षण शिविर जयपुर में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के कर कमलों द्वारा हुआ। इसी पुस्तक का लोकार्पण जबलपुर में वात्सल्य पर्व के दिन पण्डित श्री राजेन्द्रकुमार जी जैन जबलपुर के द्वारा किया गया। इस पुस्तक में आध्यात्मिक, धार्मिक, प्रेरणादायी ३० मधुर कविताओं का संकलन किया गया है। इन कविताओं की रचना श्री विराग शास्त्री द्वारा की गई है।

गढ़ाकोटामेंवेदीशिलान्यासएवंछहढ़ालाप्रवचनशिविरसंपन्न

मध्यप्रदेश के सागर नगर से 45 किमी दूरी पर स्थित गढ़ाकोटा में स्थानीय मुमुक्षु मण्डल द्वारा आयोजित वेदी शिलान्यास सानंद संपन्न हुआ। दिनांक 21 अगस्त से 23 तक आयोजित यह इस कार्यक्रम में दैनिक कार्यक्रम में गुरूदेवश्री के प्रवचन के आधार से छहढ़ाला शिविर का आयोजन भी हुआ। इस महोत्सव में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर का लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के अनुभवी निर्देशन में संपन्न हुआ।

औरंगाबाद में दशलक्षण पर्व संपन्न / चहकती चेतना के अनेक सदस्य बने।

दिगम्बर जैन धर्म के शाश्वत पर्व दशलक्षण महापर्व के अवसर पर औरंगाबाद जैन समाज द्वारा श्री दशलक्षण विधान एवं प्रवचन शृंखला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पधारे विद्वान पण्डित विराग शास्त्री जबलपुर द्वारा प्रतिदिन प्रातः विधान के पश्चात् समयसार परमागम के सर्वविशुद्ध ज्ञान अधिकार पर, दोपहर एवं शाम को स्तोत्र के अर्थ एवं जिनागम की विशेषतायें एवं रात्रि को मेरी भावना पर हुये व्याख्यानों का लाभ मिला। सांयकालीन सभा में स्थानीय विद्वान पण्डित संजयजी राउत एवं श्री विशाल पाटनी के दशधर्म पर हुये व्याख्यान का भी लाभ प्राप्त हुआ। पाठशाला का संचालन श्री स्वप्निल शास्त्री द्वारा किया गया।

समाज के लिये एक सुव्यवस्थित एवं स्वतंत्र भवन की आवश्यकता की पूर्ति हेतु साधर्मियों ने उदारतापूर्वक सहयोग करते हुये विपुल राशि एकत्रित की, इस राशि से एक योग्य स्थान पर स्वतंत्र स्वाध्याय भवन का निर्माण किया जायेगा। इस हेतु सभा ने श्री महावीर कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन सर्वोदय ट्रस्ट के गठन का प्रस्ताव की अनुमोदना की।

इस अवसर पर बाल त्रैमासिक पत्रिका चहकती चेतना के 84 नवीन सदस्य बने और बाल वीडियो सीडी भी घर - घर पहुँची।

बण्डा जि. सागर में सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं छहढ़ाला प्रवचन शिविर संपन्न

मध्यप्रदेश के सागर नगर से 40 किमी दूरी पर स्थित बण्डा में स्थानीय श्री महावीर स्वामी कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मण्डल द्वारा आयोजित सिद्धचक्र मण्डल विधान सानंद संपन्न हुआ। दिनांक 13 अगस्त से 19 अगस्त तक आयोजित यह इस कार्यक्रम के दैनिक कार्यक्रमों प्रातः विधान पूजन, प्रवचन आयोजित हुआ। प्रतिदिन गुरूदेवश्री के प्रवचन के आधार से छहढ़ाला प्रवचन शिविर का आयोजन भी हुआ। गुरूदेवश्री प्रवचन के पश्चात् प्रवचन में समागत मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा हुई। इस महोत्सव में पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड, श्री विराग शास्त्री जबलपुर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के अनुभवी निर्देशन में संपन्न हुआ।

सिद्धक्षेत्र गजपंथा में दशलक्षण महापर्व एवं छहढ़ाला प्रवचन शिविर संपन्न

सप्त बलभद्रों की निर्वाण भूमि सिद्धक्षेत्र गजपंथा में पर्वत की तलहटी में आयोजित दशलक्षण महापर्व सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रातः दशलक्षण मण्डल विधान-पूजन का आयोजन किया गया। प्रतिदिन पण्डित सिद्धार्थ दोशी रतलाम एवं पण्डित अनिल शास्त्री 'धवल' भोपाल के व्याख्यानों का लाभ मिला। प्रतिदिन गुरूदेवश्री के प्रवचन के आधार से छहढ़ाला प्रवचन शिविर का आयोजन भी हुआ। गुरूदेवश्री प्रवचन के पश्चात् प्रवचन में समागत मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा हुई। इसका संचालन श्री अनिल 'धवल' द्वारा किया गया।

सुदेव को छोड़कर कुदेवों की पूजा करना, अमृत छोड़कर जहर पीना है।

"जिनधर्म की लोरी" सीडी का विमोचन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा बाल वर्ग में जिनधर्म के संस्कारों के लिये किये जा रहे प्रयासों के अन्तर्गत नवीन गतिविधि के रुप में नवीन सीडी जिनधर्म की लोरी सीडी का विमोचन किया गया। इस सीडी का विमोचन कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन के मुख्य आयोजकत्व में सम्मेदशिखरजी में आयोजित आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर हुआ। इस सीडी में 9 मधुर धार्मिक लोरियों का संकलन है। इनकी रचना बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित राजेन्द्र कुमारजी, ब्र.सुनील जी शिवपुरी एवं श्री विराग शास्त्री द्वारा की गई है।

छहढ़ाला वर्ष के अन्तर्गत छहढ़ाला प्रवचन शिविर के आगामी आयोजन

टीकमगढ़	- 30 अक्टूबर से 6 नवम्बर 2014 - श्री विराग शास्त्री, जबलपुर
करेली	- 30 अक्टूबर से 6 नवम्बर 2014 - पण्डित रजनीभाई दोसी, हिम्मतनगर
वाशिम	- 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2014 - पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर
मकरोनिया	- 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2014 - पण्डित मनीष शास्त्री, खतौली
उदयपुर	- 25 दिसम्बर से 1 जनवरी 2015-पं. अभिषेक शास्त्री, पालड़ी अहमदाबाद
गुना	- 30 अक्टूबर से 6 नवम्बर 2014 - डॉ. राकेशजी शास्त्री, नागपुर
राघौगढ़	- 23 अक्टूबर से 27 अक्टूबर 2014 - पण्डित जयकुमारजी जैन बांरा
रतलाम	- 23 दिसम्बर से 28 दिसम्बर 2014 - श्री विराग शास्त्री, जबलपुर
जबेरा-दमोह	- 25 दिसंबर से 30 दिसम्बर 2014 - अशोक शास्त्री, राघौगढ़
शिवपुरी	- 20 नवम्बर से 23 नवम्बर 2014 - पण्डित रजनीभाई दोसी, हिम्मतनगर

अधीक्षिका की आवश्यकता

आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन, दिल्ली में एक योग्य अधीक्षिका (वार्डन) की आवश्यकता है। आवास, भोजन की व्यवस्था के साथ उचित वेतनमान दिया जायेगा।

संपर्क सूत्र - राजकुमारी जैन, निदेशिका मो. 9711229134

जिनधर्म प्रभावना ट्रस्ट की पुरस्कार योजना

बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी की प्रेरणा एवं निर्देशन में स्थापित
जिनधर्म प्रभावना ट्रस्ट
द्वारा निम्न पुरस्कार योजनाओं की घोषणा की गई है।

1. **वैय्यावृत पुरुस्कार** - आपने या आपके परिचित व्यक्ति ने परिवार के किसी सदस्य की, परिचित साधर्मी अथवा अपरिचित साधर्मी की सेवा की हो अथवा उसकी समाधि में प्रबल निमित्त बने हों तो ऐसे साधर्मी को ट्रस्ट द्वारा वैय्यावृत पुरुस्कार से सन्मानित किया जायेगा। इस योजना का उद्देश्य प्रत्येक साधर्मी वृद्धावस्था में अपने परिणामों की संभाल करे, उसके परिणामों की स्थिरता में साधर्मी सहायता करें और एक स्वस्थ वातावरण समाज में तैयार हो ऐसी भावना है। इस पुरुस्कार के प्रविष्टि करने के लिये आपको एक फार्म भरना होगा, जिसमें स्वयं की और समाधि पाने वाले व्यक्ति की सम्पूर्ण जानकारी के साथ समाज के विद्वान/अध्यक्ष / मंत्री की संस्तुति आवश्यक होगी।
2. **संयम पुरुस्कार** - इस पुरुस्कार के अन्तर्गत जो किशोर/युवा एक प्रपत्र भरकर कि विवाह पूर्व अनैतिक सम्बन्ध/प्रेम विवाह/ विदेश में बसने का त्याग संकल्प लेंगे उन्हें **संयम पुरुस्कार** से सन्मानित किया जायेगा।
3. **आरोही पुरुस्कार** - इस योजना के अन्तर्गत जो युवक-युवती गर्भपात करने-कराने-अनुमोदना का त्याग करेंगे उन्हें **आरोही पुरुस्कार** से सन्मानित किया जायेगा। इसके लिये युवाओं को को एक संकल्प पत्र भरना होगा।

सभी योजनाओं में सहभागिता के लिये आपको एक फार्म भरकर भेजना होगा। जिसके आधार फार्म का निरीक्षण करके पुरुस्कार के लिये चयन किया जायेगा। इच्छुक साधर्मी फार्म प्राप्त करके लिये संपर्क करें तथा इस योजना का अपने स्तर पर प्रचार-प्रसार कर इस पुनीत कार्य में सहयोग प्रदान करें। संपर्क सूत्र - **9300642434, kahansandesh@gmail.com**

अग्नि बुझाने के लिये, नीर चाहिये।
दुखों को समझने के लिये, दिल में पीर चाहिये।
हिंसा के जोर से, चलती नहीं दुनिया।
हिंसा को मिटाने के लिये, महावीर चाहिये।।

चेत चेत रे चेतन प्यारे।
कर्मों के फल न्यारे-न्यारे ।।

अपनी आत्मा अज्ञान ही समस्त अपराधों का जनक है। अनादि काल से जीव ने आतमा की विराधना से अनंत भव व्यर्थ गंवा दिये। हमारे प्रत्येक समय के परिणामों का फल समयानुसार मिलता ही है। दूसरे जीवों के पाप उदय हमें चेतावनी देकर सावधान करते हैं। इस बालक को देखिये। गणेश जैसे चेहरे का साथ जन्म हुआ और लोग उसे भगवान मानकर पूजने लगे। यदि हमारे परिवार में ऐसा कोई बच्चा जन्म ले तो हमारे परिणाम कैसे होंगे स्वयं विचार करें

इस फोटो में देखिये । अधिक मोह का फल। शरीर एक - दो जान। लेकिन अपनी इच्छा से कोई कार्य नहीं कर सकतीं। उदय का विचार करें -

कैडबरी में सुअर का मांस और अण्डाः क्या अब भी नहीं जागेंगे

कैडबरी चाकलेट पर संकट

मुस्लिम समुदाय में रोष

कैडबरी जैसा चॉकलेट का नामी ब्रांड भी यदि अपने उत्पाद में मांस मिलाने लगे तो शाकाहारी लोगों को चिन्ता होना स्वाभाविक है। सामान्य तौर पर सभी लोग यही मानते हैं कि चॉकलेट में कोको, दूध, चीनी, मावा आदि रहता है लेकिन हम चहकती चेतना के माध्यम से और अनेक संस्थायें भी अपने स्तर पर कई वर्षों से सावधान करती रहीं है कि चॉकलेट में मांस और अण्डा का मिश्रण किया जा रहा है।

मलेशिया में कैडबरी की दो अलग-अलग चॉकलेट में सुअर का डीएनए पाया गया। मलेशिया में की आबादी का अधिकांश हिस्सा मुस्लिम है और मुस्लिम सम्प्रदाय में सुअर के मांस को खाना महापाप माना जाता है। मलेशिया के मुस्लिम संगठनों ने कैडबरी कंपनी के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की मांग की है। इस सच के सामने आने पर कैडबरी कंपनी ने बाजार से सारी डेयरी मिल्क चॉकलेट वापस ले लीं। मलेशिया के एक बड़े व्यापारी बजीर अहमद ने कहा - हमें ऐसा लगता है कि कैडबरी अपने सभी उत्पादों में मांस का प्रयोग करती होगी, अब हम सावधान रहेंगे।

मुस्लिम समाज अपने सिद्धान्तों पालन के लिये पूर्ण समर्पित रहता है तो क्या हम शाकाहारी समाज अपने धर्म की रक्षा के लिये स्वयं को और अपने बच्चों को इतना भी नहीं समझा सकते।

और भी देखें बाजार की अभक्ष्य वस्तुओं के दृश्य -

डेयरी मिल्क की नई चॉकलेट में अण्डा मिलाया गया है। आप स्वयं देख लें-

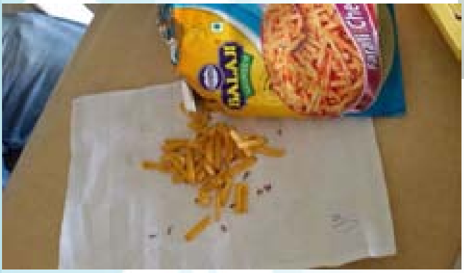

बालाजी कम्पनी के नमकीन में निकले कीड़े

पेप्सी की सीलबंद बोतल में सांप -

विमल पान मसाला में निकली छिपकली

पिज्जा में सुअर का गोश्त

भड़के लोगों की थाने में शिकायत

[illegible]

पिज्जा के मेन्यु से खुलासा

[illegible]

1 माह से बिक्री

[illegible]

मुफ्तियों ने दिया फतवा

[illegible]

भोगों से तृष्णा ही बढ़ती है, तृप्ति तो आत्मज्ञान और संयम से होती है।

कहीं आपको भी
मोबाइल गेम
खेलने की लत तो नहीं ....

इस बालक का
हाथ देखिये।
मोबाइल पर लगातार गेम
खेलने से मोबाइल गर्म हो
गया और वह फट गया और
इसके हाथ की सारी उंगलियाँ
विस्फोट से उड़ गईं।

चार्जिंग में लगे हुये
मोबाईल फोन से
बात करते हुये
फोन फट गया ।

बस स्वाद में थोड़ा कड़वा है वरना सच का कोई जबाब नहीं।

आर्ट कैम्प
2014

बच्चों के लिये एक और उपहार

अपने बच्चों को जिनधर्म के संस्कार दीजिये

नवीन प्रकाशन

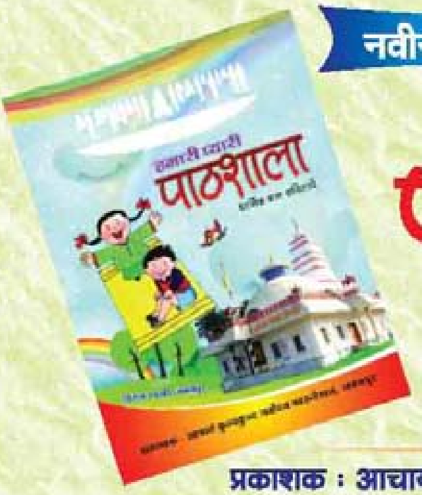

हमारी प्यारी

पाठशाला

प्यारी-प्यारी 30 सचित्र

बाल कविताओं का अनुपम संग्रह

रचनाकार - **विराग शास्त्री**, जबलपुर

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर

अब अपने बच्चों को सुनाईये

जिनधर्म के संस्कार देतीं मधुर लोरियाँ

नवीन सी.डी.

जिनधर्म की

लोरी

रचनाकार -

- बाल. ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन,
- पण्डित श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन
- विराग शास्त्री, जबलपुर

निर्माता : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर